लौट रहा है: बकैती सीज़न 2

हिंदी ज़ी5 ने लोकप्रिय 'बकैती' सीज़न 2 का ट्रेलर जारी किया है। यह सीरीज़ 25 सितंबर 2026 को विशेष रूप से प्लेटफॉर्म पर प्रीमियर होगी। मध्यमवर्गीय परिवार और उसकी रोजमर्रा की परेशानियों को अपनेपन और नए अंदाज में दिखाने वाली इस सीरीज़ को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला था। अब दर्शकों का पसंदीदा कटारिया परिवार लौट आया है–इस बार और भी ज़्यादा हंसी, टकराव, अपनापन और दिल को छू लेने वाले पलों के साथ। पुराने गाजियाबाद की जानी-पहचानी गलियों की पृष्ठभूमि में, सीज़न 2 में कटारिया परिवार एक बार फिर साथ नजर आएगा। इस बार वे नई चुनौतियों, बदलते पारिवारिक रिश्तों और परिवार के साथ जुड़े उन खूबसूरत, लेकिन उलझे हुए पलों का सामना करेंगे, जो हर घर की कहानी का हिस्सा होते हैं।डाइस मीडिया द्वारा निर्मित और समर चित्रा द्वारा निर्देशित बकैती सीजन 2 में राजेश तैलंग, शीबा चन्ना, तान्या शर्मा और आदित्य शुक्ला एक बार फिर कटारिया परिवार के मुख्य सदस्यों के रूप में नजर आएंगे।

अक्षय सर के साथ काम करना शानदार अनुभव रहा

'रुस्तम' के एक दशक बाद, अर्जन बाजवा इस फ़िल्म को न सिर्फ़ अपने करियर के एक अहम प्रोजेक्ट के तौर पर देखते हैं, बल्कि एक ऐसे पल के तौर पर भी देखते हैं जिसने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि इंडस्ट्री में अपनी स्थायी जगह बनाने के लिए क्या करना पड़ता है। वे कहते हैं, 'अक्षय सर के साथ काम करना ज़ाहिर है कि एक शानदार अनुभव रहा है। मैं खुद को उनका सबसे बड़ा फ़ैन मानता हूँ। मैंने हमेशा उन्हें अपना आदर्श माना है। 'उन्होंने कहा, 'कोई सुपरस्टार बनता है या नहीं, यह आपकी किस्मत पर निर्भर करता है। लेकिन कम से कम जो चीज़ें आपके हाथ में हैं - जैसे अपने करियर को आगे बढ़ाना, सही फ़िल्में चुनना, अपनी मार्केटिंग करना, अपनी एक छवि बनाना - ये काम किसी अनुभवी व्यक्ति या आपकी टीम को करने चाहिए।' , 'आप अकेले सब कुछ नहीं कर सकते। काश मेरे पास शुरू से ही वह सपोर्ट सिस्टम होता, और मैं तो कहूंगा कि 2016 के बाद से तो इसकी और भी ज़्यादा ज़रूरत थी। '

नई चुनौती का सामना करेंगे डॉ. देव

शो यादें डॉ. देव (इक़बाल खान) और डॉ. सृष्टि (गुलकी जोशी) किलारी गाँव में जीवन को सँभालते हुए दिखाई देंगे। जैसे ही डॉ. देव की यात्रा उन्हें शहर के अस्पताल के परिचित माहौल से दूर ले जाती है, वे अब गाँव में एक बिल्कुल नई चुनौती का सामना करने वाले हैं। डॉ. देव और डॉ. सृष्टि जल्द ही समझ जाते हैं कि गाँव वाले उनके अलग रहने के निर्णय को स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए दोनों ने यह तय किया कि वे अपनी जुदाई को गुप्त रखेंगे और खुद को पति-पत्नी के रूप में प्रस्तुत करते रहेंगे।यह दिखावा उन्हें गाँव के जीवन में घुलने-मिलने में मदद कर सकता है, लेकिन साथ समय बिताना और पुराने परिचित किरदारों में लौटना उनके बीच पुरानी यादों और भावनाओं को वापस ला सकता है। जैसे-जैसे डॉ. देव और डॉ. सृष्टि इस असामान्य परिस्थिति से गुज़रते हैं, यह देखना बाकी है कि क्या यह दिखावा उन्हें उस दूरी पर सवाल उठाने पर मजबूर करेगा जिसे बनाए रखने का उन्होंने निर्णय लिया था।

दृश्यम: द कन्क्लूज़न का पहला गाना 'विंगांसा' रिलीज़

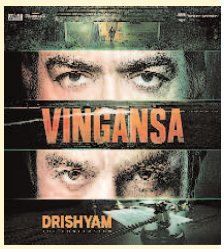

फिल्म 'दृश्यम: द कन्क्लूज़न' का पहला गाना 'विंगांसा' रिलीज़ हो गया है। दमदार ट्रेलर के बाद, जिसमें अजय देवगन एक बार फिर विजय सलगांवकर के किरदार में लौटे हैं और जयदीप अहलावत एसपी क्राइम ब्रांच राजवीर सिंह तोमर के रूप में नज़र आएंगे, यह गाना फिल्म के तनाव और बदले की भावना को दर्शाता है।गाने का शीर्षक 'विंगांसा' पुर्तगाली शब्द '1द्वठुद्दड्डठुड्डि' से प्रेरित है, जिसका अर्थ है बदला या प्रतिशोध। इसे रवि बसरूर ने कंपोज़ किया है, बोल आमिल कीयान खान ने लिखे हैं और सिद्धार्थ बसरूर ने गाया है। फिल्म 2 अक्टूबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी। संगीतकार रवि बसरूर ने कहा, 'विंगांसा के साथ मैं चाहता था कि संगीत में धीरे-धीरे बढ़ता हुआ दबाव महसूस हो। विजय की दुनिया में सतह के नीचे बहुत कुछ चल रहा है और संगीत को बिना ज़्यादा शोर मचाए उसी भावना को दिखाना था। सिद्धार्थ की आवाज़ में जो कच्चापन और तीव्रता है, वह गाने के लिए बेहद खूबसूरती से काम कर गई। '

इंदौर में टॉकीज:पहले और आज?

इन्दौर मे सिनेमा तब और अब,इंदौर में सिनेमा सन 1917 में पहली बार आया था तब जवाहर मार्ग पर वाघमारे के बाड़े में छोटी छोटी गूँगी अंग्रेजी फिल्में कार बेट्री की रोशनी में दिखाई जाती थी।दोआने,चार आने,छहआने,आठ आने का प्रवेश शुल्क था।प्रोजेक्टर हाथों से घुमाते थे। पर्दे पर दृश्य कभी तेज, कभी धीमे नजर आते थे। सिनेमा के परदे के सामने नाचने गाने वाले बैठते थे और बैकग्राउंड म्यूजिक देते थे।इंटरवल में भी दर्शकों के लिए प्रोग्राम देते थे। दर्शकों के लिए सब कुछ अजूबा और चमत्कार था।सन1918 में नंदलालपुरा में रॉयल सिनेमा आया, जो टेंट में चलता था। इसी साल सेठ धन्नालाल-मन्नालाल ने मोरोपंत सावे की पार्टनरशिप में बोराड़े थियेटर बनाया। दो शो चलते थे, शाम को अंधेरा होने पर लोग जान-पहचान वालों से नजरें बचा कर पिक्चर देखने जाते थे।सन1922 में नरहरि अड़सुले ने श्रीकृष्ण टाकीज बनाया।बाँस की खपच्चियों और टीन की चद्दरों से यह बना था।बाद में पक्का कराया।सन1923 में क्राउन टॉकीज बना, जिस का नाम बदलकर प्रकाश टाकीज किया गया। सन1931 में भारत की पहली बोलती फिल्म आलमआरा श्रीकृष्ण टाकीज में लगी थी। इस को देखने दो सौ किमी दूर से भी लोग आते थे।तीन महीनों तक लगातार चली थी यह फिल्म, क्योंकि पहली बार गूँगा बोलने लगा था।सन1933 से प्रतिदिन तीन शो और सन 1956 से प्रतिदिन चार शो चालू हुए थे।सन1947 के बाद धीरे-धीरे सभी आधुनिक होने लगे और सुख सुविधाएँ बढ़ने लगीं। पहले टिकिट दर दोआने से एक रूपया थी। बाद के सालों में बढ़ते बढ़ते टिकट दर एक रूपये से पांच रूपये हो गई।चाय-नाश्ते के केंटीन, पान-बीड़ी की दुकानें, साइकिल पार्किंग इत्यादि व्यवस्थाएँ शुरू से ही रहीं।इंटरवल में टाकीज के अंदर तक समोसे, कचौरी, कुल्फी, मूँगफली, चना जोर गरम बिकता था। अनंत चौदस के दिन पाँच, पांच, छह-छह शोज़ चलते थे। सुबह नौ बजे से लेकर रात तीन बजे तक लोग फिल्म देखते थे।सन1927 में सियागंज कार्नर

पर प्रभात टॉकीज बना, जिस का नाम बदल कर एलोरा टॉकीज किया गया। एलोरा की छत पर अजंता टॉकीज भी बना।सन1934 में रीगल, डायमंड और नीलकमल टॉकीज बने।सन1936 में महाराजा,सन1942 में मिल्की वे,सन1946 में सरोज,सन1947 में भारत(नवीनचित्रा) और राज टॉकीज,सन1948 में स्टारलिट,सन1949 में यशवंत,सन1950 में अलका,ज्योति,सन 1965 में बेम्बिनो,सन1969 में मधुमिलन बना।इस के बाद के सालों में कस्तूर, प्रेमसुख, कुसुम, देवश्री,

अभिनयश्री, सपना-संगीता, सत्यम, अनूप, आस्था और मनमंदिर टॉकीज भी बने।इंदौर की सुमधुर यादों के लिए,यह सामग्री जैसा सोशल मीडिया पर सोमानी सर से प्राप्त हुआ,समस्त इंदौरी होंन को याद ताजा करने के लिए लेख रूप में प्रस्तुत है।आज अब इने गिने गिनती के टाकीज शहर में बचे हैं ।मुझे लगता है आस्था,सरोज,और एकाध टाकीज बताने को बचा है।बाकी सब छबिगृहँ समाप्त हो गए है।इन टाकिजों की जगह मॉल,पीव्हीआर ने ले ली है।पुराने जमाने की यादें अब बस शेष रह गई है।सन1980 में शहर में कुल मिलाकर बाईस टाकीज थे।जिसमें तड़ी मारकर,दादाजी से हट-बच कर,अप्पा काका के साथ नब्बे पैसे,डेढ़ रुपये की टिकिट में भी खूब सिनेमा सुतते थे।बाहर से आये मेहमान को सबसे पहले टाकीज लेजाकर फ़िल्म देखते फिर अन्य काम निबटाते थे।मध्यांतर में कमलेश काका के साथ क्रीम रोल,समोसे,मुमफली,फुटाने का मजा लेते थे।कई भाई लोग सिगरेट का धुंआ उड़ाते रहते थे।उस जमाने में लोग हिट गाने पर चिल्लर उछालते थे।कई लोग तो गाने पर नाच उठते थे।डायलॉग भी अपने पसंदीदा हीरो का साथ-साथ बोलते थे।पुराना समय ,पुराने लोग अब याद आते है।संगीत के लोग दीवाने थे,नवरंग जैसी फिल्में खूब चलती थी।लोग बकते थे यार वा वाली फिल्म टाकीज की दीवाल भी तोड़ देयगी?मतलब अड़ासुड़ भीड़ पड़ेगी,कने कई करेगी?फिल्मों के प्रति लोगों की इतनी दीवानगी थी कि लोग एक फ़िल्म को दो-तीन बार देख लेते थे।यार लोग मजाक उड़ाते थे कि कई भय्या वा वाली फिल्म रटेगो कई?कहने का सार यह था कि उस चलचित्र को सीन बाय सीन मौखिक याद करेगा क्या?

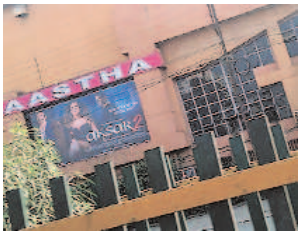

गमन्या शंकर इंदौरी
विजयनगर,
इंदौर452010मप्र

'मुसाफिरी' का ट्रेलर रिलीज़

रिचा चड्ढा ने अपनी पहली नॉन-फिक्शन सीरीज़ 'मुसाफिरी' का ट्रेलर रिलीज़ कर दिया है। यह यूट्यूब की दुनिया में भी उनका पहला कदम है। रिचा ने खुद इस सीरीज़ को होस्ट, प्रोड्यूस और लिखा है। आठ एपिसोड की यह सीरीज़ 'फ़ुल स्टॉप' नाम के नए यूट्यूब चैनल पर रिलीज़ होगी, जिसे रिचा चड्ढा और अली फज़ल ने लॉन्च किया है। पहला एपिसोड 25 सितंबर को आएगा और इसके बाद हर शुक्रवार एक नया एपिसोड रिलीज़ होगा।रिचा चड्ढा द्वारा होस्ट, प्रोड्यूस और लिखी गई आठ एपिसोड की यह सीरीज़ मुंबई को एक अलग नज़रिए से दिखाती है, जहां शहर की अनसुनी कहानियों, लोगों, जगहों और इतिहास से रूबरू होने की कोशिश की गई है।'मुसाफिरी', रिचा चड्ढा और अली फज़ल के प्रोडक्शन हाउस पुशिंग बटटंस स्टूडियोज़ की दूसरी प्रोडक्शन है। इससे पहले उनका प्रोडक्शन 'गर्ल्स विल बी गर्ल्स' काफी सराहा गया था और सनडांस में इसे कई बड़े सम्मान मिले थे।

राइज़ एंड फॉल सीज़न 2

मुंबई, मनोरंजन और ड्रामा का रोमांच अपने चरम पर पहुँचने वाला है, जहाँ सत्ता की खींचतान, दमदार हस्तियाँ, बदलते रिश्ते और हर मोड़ पर आने वाले रोमांचक ट्विस्ट देखने को मिलेंगे! भारत की सबसे बड़ी एक्सक्लूसिव ओरिजिनल्स स्ट्रीमिंग सर्विस प्राइम वीडियो ने आज धमाकेदार मसाला रियलिटी शो राइज़ एंड फ़ॉल सीज़न 2 का प्रोमो जारी किया। इस प्रोमो में 15 प्रतियोगियों की शानदार टीम में से पहले चार प्रतियोगियों स्वरा भास्कर, शहज़ाद पूनावाला, प्रियंका चाहर चौधरी और करण पटेल से परिचित कराया गया है! इस शो की मेज़बानी वीरेंद्र सहवाग कर रहे हैं। अपनी खास हाज़िरजवाबी, बेबाक अंदाज़ और सीधी बात करने के तरीके से शो में जान डालेंगे। यहाँ किस्मत स्कोरकार्ड से भी तेज़ी से बदल सकती है और आज का शासक कल का कामगार बन सकता है। 26 सितंबर से शुरू होने वाला यह नया सीज़न 42 दिनों तक लगातार रहेगा।

तेज नहीं, बस चलते रहना जरूरी है: अनिल कपूर

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेता अनिल कपूर ने अपनी फिटनेस यात्रा से जुड़ा एक नया वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया है, जिसमें वह रेसिंग ट्रैक पर पूरी ताकत के साथ दौड़ते नजर आ रहे हैं। अभिनेता ने इस वीडियो के साथ एक महत्वपूर्ण संदेश दिया कि लगभग चार साल बाद उन्होंने इस तरह अपनी दौड़ को रिकॉर्ड किया है। इन चार सालों में उनकी रफ्तार जरूर बदली, लेकिन उनका सफर कभी रुका नहीं। अनिल कपूर ने इंस्टाग्राम पर साझा किए गए इस वीडियो में रेसिंग ट्रैक पर पूरी गति से दौड़ते हुए अपनी दृढ़ता और समर्पण का प्रदर्शन किया है। वह अपनी पूरी रफ्तार के साथ दौड़ते दिखाई दे रहे हैं, जो उनकी अद्भुत फिटनेस का प्रमाण है। इस वीडियो को साझा करते हुए, अनिल ने अपने पुराने रनिंग वीडियो को भी याद किया और बताया कि कैसे लगभग चार साल बाद उन्होंने फिर उसी तरह अपनी दौड़ को रिकॉर्ड किया है। अपने कैप्शन में, अनिल कपूर ने लिखा, चार साल हो गए हैं, जब मैंने आखिरी बार इस तरह की अपनी रनिंग रिकॉर्ड की थी। यह सफर वास्तव में कभी रुका नहीं, बस इसकी रफ्तार बदली, इसका रूप बदला और यह आगे बढ़ता रहा। प्रगति हमेशा इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप कितनी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। कभी-कभी बस चलते रहना ही काफी होता है।